

सोण कोळिविस  
एवं  
सोणा

(अत्यधिक प्रयत्नशीलों में अग्र)



विपश्यना विशोधन विन्यास

**सोण कोळिविस**  
**एवं**  
**सोणा**

(अत्यधिक प्रयत्नशीलों में अग्र)



**विषयना विशोधन विन्यास**  
**धम्मगिरि, इगतपुरी**

## भगवान बुद्ध की उद्घोषणा

\*\*\*\*\*

“एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनां  
आरद्धवीरियानं यदिदं सोणो कोळिविसो।”  
“एतदग्गं, भिक्खवे, मम साविकानं भिक्खुनीनां  
आरद्धवीरियानं यदिदं सोणा।”

– अङ्कुरनिकाय (१.१.२०५, २४१)

“भिक्षुओ, मेरे भिक्षु-श्रावकों में – अत्यधिक  
प्रयत्नशीलों में अग्र हैं सोण कोळिविस।”  
“भिक्षुओ, मेरी भिक्षुणी-श्राविकाओं में – अत्यधिक  
प्रयत्नशीलों में अग्र हैं सोणा।”

\*\*\*\*\*

# सोण कोळिविस एवं सोणा

## विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय

[vii]

<b>सोण कोळिविस</b> .....	१
जन्म तथा नामकरण . . . . .	१
सोण कोळिविस की प्रव्रज्या . . . . .	१
मध्यम मार्ग . . . . .	३
अर्हत्व प्राप्ति का सम्यक-रीति से बखान . . . . .	८
भिक्षुसंघ को पादत्राण प्रयोग की अनुमति . . . . .	९
अतीत कथा . . . . .	९
<b>सोणा</b> .....	१२
बहुपुत्तिका की दुर्गति . . . . .	१२
प्रयत्नशील सोणा . . . . .	१२
नत्थि दानि पुनब्भवो . . . . .	१४
सोणा का अतीत . . . . .	१५

## प्रकाशकीय

भगवान बुद्ध की शिक्षा सभी के लिए एक-समान थी – चाहे कोई पुरुष हो या नारी। किसी प्रकार का कोई भेद-भाव नहीं। जो इस पथ पर चले उसी के लिए आशुफलदायिनी। सभी को एक-समान फल देने वाली।

बुद्ध की शिक्षा का अनुकरण कर सोण कोळिविस तथा सोणा ने एक-समान निर्वाण का फल चखा। भगवान ने अपने भिक्षु-श्रावकों तथा भिक्षुणी-श्राविकाओं में, क्रमशः, आयुष्मान सोण कोळिविस तथा सोणा को अत्यधिक प्रयत्नशीलों में अग्र की उपाधि प्रदान की।

\*\*\*\*\*

अङ्गदेश के चम्पानिवासी सोण कोळिविस ने भगवान की धर्मदेशना सुनी। धर्मदेशना से वे अत्यंत प्रभावित हुए। भगवान की शिक्षा के प्रति उनमें अपार श्रद्धा जागी। भगवान से उन्होंने प्रव्रज्या की मांग की। सोण ने तत्काल भगवान से प्रव्रज्या पायी। प्रव्रजित सोण परिश्रमपूर्वक तप करने लगे।

सोण का शरीर अति कोमल था। चंक्रमण करते समय उनके पैरों में छाले पड़ गये जिससे सारा चंक्रमण-स्थल रक्तमय हो गया। तदुपरांत वे घुटनों तथा हाथों के बल चंक्रमण करते रहे। फिर भी उन्हें निर्वाण-पथ पर कोई उपलब्धि प्राप्त नहीं हुई। सोण ने प्रव्रज्या को तज गृहस्थ जीवन में लौट जाने की सोची। भगवान ने उनके चित्त के वितर्क को जान लिया।

भगवान ने स्वयं ही बीच का मार्ग अपना कर संबोधि प्राप्त की थी। अनेक गृहत्यागियों को भगवान ने यही सिखाया कि वे न तो कामभोगजन्य शिथिलता में पड़ें और न ही देह-दंडन के निरर्थक व्रतों की उग्रता में। इस अवसर पर भगवान ने सोण को समझाते हुए कहा – वीणा के तार को इतना ढीला भी न हो जाने दें कि उससे झंकार ही न निकले और न ही इतना खींचें कि तार ही टूट जाय क्योंकि अत्यंत प्रयत्नशील होना उद्धतपन

**[viii]** / सोण कोळिविस एवं सोणा

---

का कारण बन जाता है। अत्यंत ढीला छोड़ देना आलस्य का कारण बन जाता है। अतः दोनों के बीच का मार्ग ही सही मार्ग है।

भगवान के निर्देशानुसार तप करते हुए आयुष्मान सोण ने शीघ्र ही जान लिया कि जन्म क्षीण हो गया, ब्रह्मचर्य-वास पूरा हो गया, करणीय समाप्त हो गया और पुनर्जन्म के लिए कुछ शेष नहीं रहा। आयुष्मान सोण अर्हतों में से एक हुए।

\*\*\*\*\*

अनेक संतति वाली सोणा अपनी संतति द्वारा उपेक्षित हो वृद्धावस्था में प्रव्रजित हो गयीं। वृद्धावस्था में वे सिखाये हुए धर्म को ठीक से ग्रहण न कर पातीं जिस पर उनकी संतति तथा अन्य भिक्षुणियां उन पर व्यंग्य कसतीं। यह सब देख-सुनकर उनके अंदर धर्मसंवेग जागा – ‘अपनी गति सुधारना अपने हाथों में है।’ दृढ़तापूर्वक परिश्रम करती हुई सोणा ने शीघ्र ही अर्हत्व अवस्था प्राप्त कर ली।

\*\*\*\*\*

भगवान बुद्ध के भिक्षु-श्रावकों एवं भिक्षुणी-श्राविकाओं के जीवन के प्रेरणादायी प्रसंग हम सबकी प्रेरणा का कारण बनें जिससे विपश्यी साधक एवं साधिकाएं उनसे प्रेरणा पाकर अपनी जीवन-शैली का पुनरवलोकन कर इसका यत्किंचित परिष्कार कर सकें। इन मंगलभावों के साथ इस पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

**विपश्यना विशोधन विन्यास**